ओम् शान्ति
महाकुम्भ मेला- 2010
शिव परमात्म अनुभूति मेला
-:आयोजक:-
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
स्थान प्लाट नं.-7, नील धारा हरिद्वार
E-mail: haridwar@bkivv.org

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय:
पाण्डव भवन,
आबू पर्वत, (राजस्थान)

स्थानीय केन्द्र:
ऋषिकुल के सामने हरिद्वार
फोन नं. 226434

पत्रांक ..... दिनांक .....

प्रैस विज्ञप्ति

कामधेनु बन विश्व में शांति की मशाल जगा रही हैं ब्रह्माकुमारी बहनें: स्वामी महेशानन्द जी

13 अप्रैल, हरिद्वार : परमादरणीय म0म0 स्वामी महेशानन्द जी (मोनी बाबा जी, नर्मदा–उत्तरतट, मध्य प्रदेश) ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शिव परमात्म अनुभूति मेले की प्रदर्शनीयों का अवलोकन करने के पश्चात् अपने उदगार व्यक्त करते हुए कहा कि कुम्भकरण काम का भाई अहंकार है। काम यानि रावण अहंकार यानि कुम्भकरण तो ब्रह्म ज्ञानी के विचार से जब जीव का अहंकार बहुत बढ़ जाता है। तो वह अज्ञान निद्रा का सहारा लेकर धन की प्राप्ति के लिये अपने द्वारा अपने कर्मों के द्वारा कुर्कुत कर्म करता रहता है। और सदा बुरे कश्त में पड़ा रहता है। तथा इसी प्रकार से कुम्भकरण भी अज्ञान रूपी निन्द्रा में पड़ा रहता है। क्योंकि पापवश्त्ति के कारण कुम्भकरण की मानसिक विचारधारा अशुद्धता प्राप्त करके नाना प्रकार की व्याधियों में फंसकर अपने उद्धार के लिये भटकती रहती है। परन्तु किसी महापुरूष की कश्पा हो जाने पर अज्ञान रूपी निद्रा से उठकर ब्रह्मभाव को प्राप्त करता है। कुम्भकरण को उठाने वाले देत्य तो विकश्त विचार उसे उठाते है परन्तु पापवश्त्ती निद्रा से जागर उसे ब्रह्म के आने का आभास होता है।

इस भौतिक युग में ब्रह्माकुमारी देवियाँ कामधेनु बनकर संसारिक जीवों को अपनी अमश्तमय वचनों से कल्याण कर रही है। उन ब्रह्माकुमारी देवियों के श्रम, तप, सात्विक विचारधारा दिव्य ज्ञान को हम सब सत् वन्दन करते है। ब्रह्माकुमारी देवियों की आत्माशुद्ध चेतन की अनुभव अनुभूति करते–करते शिव तत्व के ध्यान में अपने को मिलाकर अपने प्रकाश के द्वारा ब्रह्माकुमारी सात्विक विचार और आत्म तत्व दर्शी ब्रह्माकुमारी देवियों बहनों ने विश्व में एक शान्ति की मसाल तैयार की है। जिससे जन–जन के प्राणियों के मन में सद्भाव प्रेम अपने आपको जान लेने का ज्ञान प्राप्त किया। शिव निराकार परमात्मा हमारी समस्त ब्रह्माकुमारियों देवियों के हश्दय में निवास कर रहे है। और वही ब्रह्माकुमारी देवियों को यह सब कुछ करने का निर्देश प्रदान कर रहे है। अतः हमारी भी शुभकामना है कि आप जन कल्याण के लिए कार्य करते रहे और मानव को सत् मार्ग की और प्रसस्त करे आपकी दश्ढ़ शक्ति कार्य करती रहें।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के उतराखण्ड के सेवाकेंद्रों की संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रेमलता दीदी जी ने कहा कि आवश्यकता के लिए धन कमाना अच्छा हैं, परंतु धन की अधिक भूख मनुष्य को पतन की ओर ले जाती हैं। इसलिए अपनी इच्छा को कम कर दें तो समस्या अपने आप चली जाएगी। यदि आप सदा प्रसन्न रहना चाहते हैं तो प्रशंसा सुनने की इच्छा को त्याग दें। मनुष्य स्वयं इच्छा मात्र अविद्या होकर सर्व की इच्छा पूर्ण कर सकता हैं। क्योंकि वास्तव में वही सम्पत्तिवान हैं। सर्वप्रथम मनुष्य को यह समझना आवश्यक हैं कि इच्छा और आवश्यकता में क्या अंतर है? इच्छाएं मन से तथा आवश्यकताएं शरीर से जुड़ी हैं। शरीर की अपनी आवश्यकतायें है और आत्मा की अपनी। उसके ठीक मध्य में हैं मन, जिसमें इच्छाएं है। आवश्यकताओं की तो परिपूर्ण तृप्ति हो सकती हैं, लेकिन इच्छाओं की नहीं। कहावत भी हैं पेट तो भरा जा सकता है, लेकिन पेटी नहीं। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कहां आवश्यकता समाप्त होती है और कहां से इच्छा प्रारम्भ हो जाती है। जैसे जब हमें भूख लगती है तो निःसंदेह भोजन की आवश्यकता खत्म होते ही हम रूक जाते हैं। क्योकि पेट कहता है, बस। लेकिन मन कहता हैं – थोड़ा और कृ कितना स्वादिष्ट भोजन हैं। यही इच्छा हैं। शरीर की आवश्यकता तो बड़ी सीधी साधी हैं – भोजन, पानी, कपड़ा, गर्मी सर्दी से बचने के लिए एक मकान आदि। परंतु आज मानवता अपने सुंदर मार्ग से भटक गई है। शरीर की आवश्यकताओं के कारण नहीं, बल्कि इच्छाओं के कारण। तो हमें अपनी आवश्यकताओं का दमन नहीं करना है बल्कि इच्छाओं का दमन करना हैं।